बचत का महत्त्व

(स्कूल के छात्रालय के कमरे में विनोद उदास बैठा है । हिसाब की नोटबुक उसके सामने खुली पड़ी है । उसका मित्र अशोक उससे मिलने आता है ।)

अशोक : क्या बात है विनोद, आज तुम उदास दिखाई दे रहे हो!

विनोद: क्या बताऊँ भाई, कुछ दिन से जेब बिलकुल खाली है ।

अशोक : लेकिन अभी-अभी तो तुम्हारे पिताजी का मनीआर्डर आया था ?

विनोद: अशोक, पैसा मेरे पास टिकता ही नहीं । इधर आया और उधर गया ।

अशोक : आज तो २० तारीख़ हुई है । अभी तो महीने में पूरे दस दिन बाक़ी हैं । अब क्या करोगे तुम ?

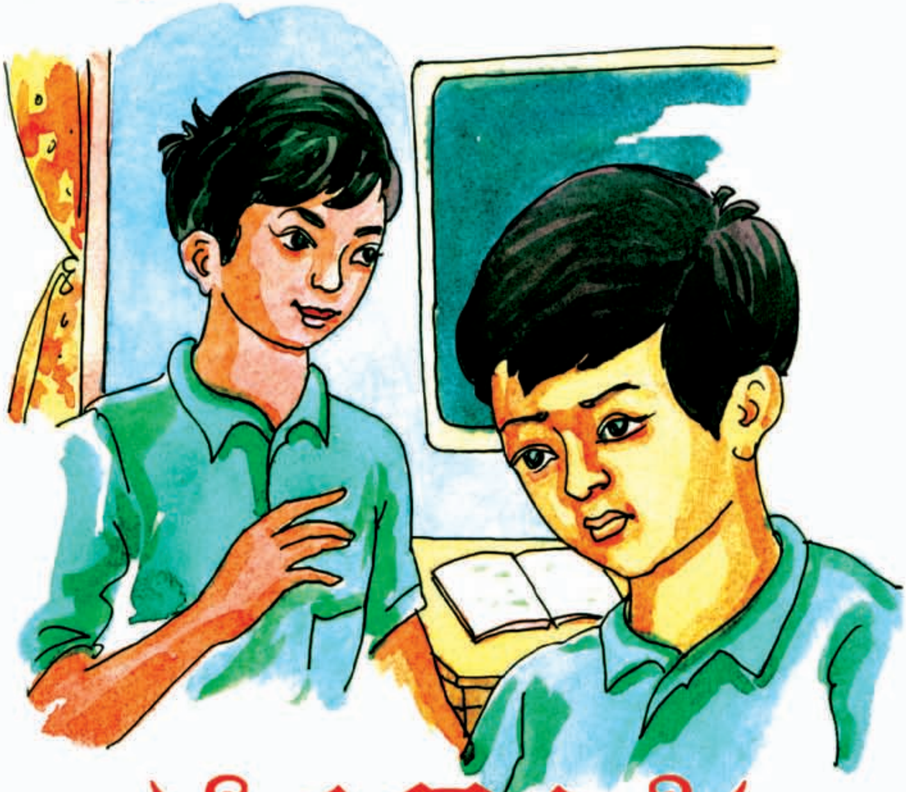

विनोद: करना क्या है ? किसी से माँग लूँगा या उधार ले लूँगा, फिर अगले महीने लौटा दूँगा ।

अशोक : देखो विनोद, तुम मेरे मित्र हो, इसलिए कहता हूँ । रोज़-रोज़ उधार लेने की आदत अच्छी नहीं है ।

विनोद: भाई, उधार लेना तो मुझे भी अच्छा नहीं लगता, पर क्या किया जाए ?

अशोक : सुनो, सबसे पहले तो तुम अपनी फिज़ूलख़र्ची की आदत छोड़ दो । मैं यह नहीं कहता कि तुम पैसे को दाँत से पकड़ो । मैं तो सिर्फ़ इतना ही चाहता हूँ कि तुम फालतू ख़र्च बंद कर दो और हर महीने जो हाथख़र्च तुम्हें मिले, उसमें से थोड़ा बहुत अवश्य बचाओ ।

विनोद: बचाने से फ़ायदा ?

अशोक : मुझे तुम्हारे प्रश्न पर हँसी आती है । न केवल आदमी, बल्कि मक्खियाँ, कीड़े - मकोड़े और जानवर तक आड़े समय के लिए बचाते हैं । कुत्ते के पास ज्यादा रोटियाँ आ जाती हैं तो वह उन्हें छुपाकर रख देता है और जब भूख लगती है तब निकालकर खाता है । कीड़े-मकोड़े भी खराब मौसम के लिए खुराक इकट्ठी करते हैं । ऊँट लम्बे सफर में जाने से पहले इतना पानी पी लेता है कि पन्द्रह-बीस दिन तक पानी न मिले तो भी उसका काम चल सकता है । जब जानवरों में इतनी समझ है, तब हम तो इन्सान हैं!

विनोद: बात तो तुमने ठीक कही । अब यह बताओ कि कैसे बचाए जाएँ पैसे ?

अशोक: सीधी-सी बात है । पैसा हाथ में रहता है तो ख़र्च हो जाता है । इस बार जैसे ही मनीआर्डर आए, डाकखाने में जाकर तुम बचत का खाता खोल लो । न पैसे हाथ में होंगे, न ख़र्च होंगे ।

विनोद: अच्छी बात है, इस बार पैसा मिलने पर ऐसा ही करूँगा ।

अशोक: एक बात और सुनो, विनोद ! यदि इस तरह हम सब थोड़ा-थोड़ा बचाकर स्कूल में एक सहकारी समिति बना सकें तो बड़ा अच्छा होगा ।

विनोद: सहकारी समिति से क्या होगा ?

अशोक: हर विद्यार्थी इसमें कुछ-न- कुछ रकम लगाएगा । इस तरह इकट्ठी हुई रकम से हम सहकारी भंडार चलाएँगे, जिसमें विद्यार्थियों के उपयोग की वस्तुएँ रहेंगी । बिक्री

से जो लाभ होगा, उसे हम राष्ट्रीय बचत-योजना में लगाएँगे । हमारे देश को विकास-योजनाओं के लिए सबसे बड़ी ज़रूरत है धन की ।

विनोद: हमारे मुट्ठीभर पैसों से देश की क्या मदद हो सकती है ?

अशोक: विनोद, तुम यह क्यों भूल जाते हो कि बूँद-बूँद करके ही घड़ा भरता है । हमारी तरह धीरे-धीरे यदि सब लोग यह बचाने लगें, तो बड़ी रकम इकट्ठी होगी । उससे देश के बड़े-बड़े काम हो सकेंगे ।

इन शब्दों के अर्थ जानो-

फिज़ूलख़र्ची - अपव्यय

मुट्ठीभर - बहुत कम

पैसा दाँत से पकड़ना - कंजूसी करना

आड़े समय - विपत्ति के समय

वाकई - वास्तव में

रकम - रुपये पैसे

१. पढ़ो और सोचो-

क) विनोद उदास क्यों था ?

ख) विनोद के पास पैसे टिकते क्यों नहीं थे ?

ग) विनोद को पैसे उधार न लेने के लिए किसने समझाया ?

घ) राष्ट्रीय बचत योजना के पैसे किस काम में आते हैं ?

२. सोचकर लिखो-

क) पैसे किन किन उपायों से बचाए जा सकते थे ?

ख) फिजूलख़र्ची से बचने के लिए अशोक ने विनोद को क्या सलाह दी ?

ग) सहकारी समिति से बच्चों का क्या लाभ होगा ?

घ) विनोद ने सहकारी योजना में नाम लिखवाने को क्यों तैयार हो गया ?

३. अर्थ जानकर रिक्त स्थान भरो-

ओर - तरफ़	शोक - दु:ख
और - तथा , अधिक	शौक - रुचि
दिन - दिवस	कर - करना क्रिया पद
दीन - गरीब	कर - हाथ

क) विनोद मेरे घर की .... आ रहा था । (और/ओर)

विनोद ....अशोक साथ-साथ स्कूल गए ।

ख) लता को चित्र बनाने का ....है । (शोक/ शौक)

बापुजी की मृत्यु पर पूरे देश ने ....मनाया ।

ग) अशोक ....के छ : बजे पढ़ने बैठता है । (दिन/ दीन)

ईश्वर .... जनों की रक्षा करते हैं ।

घ) मोहन रोज एक घंटा काम .... के विद्यालय जाता है । (कर/ कर)

मैंने अपने .... से ईश्वर को फूल चढ़ाया ।

४. निम्न शब्दों के प्रयोग से एक एक वाक्य बनाओ-

उपयोग, मौसम, आश्चर्य, ख़र्च ।

५. पाठ से आगे-

- अपने खर्च का हिसाब रखो और बचत की आदत डालो ।

- बचत के महत्व पर एक लेख लिखकर कक्षा में सबको सुनाओ ।

- पैसों की तरह आप और क्या क्या बचा सकते हैं ?